भक्तिकाल और आधुनिक साहित्य का समन्वय

नीलांबिके पाटील*

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.21438855

ABSTRACT

भक्तिकाल हिन्दी साहित्य का एक अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रभावशाली युग रहा है। भक्तिकालीन साहित्य ने भारतीय समाज में आध्यात्मिकता, समता, मानवतावाद और सामाजिक सुधार की चेतना को जन्म दिया, जिसका गहरा प्रभाव आधुनिक साहित्य पर देखा जा सकता है। भक्तिकालीन साहित्य 14वीं सदी से 17वीं सदी तक माना जाता है। आधुनिकता सामान्यतः तर्कशीलता, व्यक्तिवाद, सामाजिक न्याय और लोकतांत्रिक मूल्यों से जुड़ी होती है। भक्तिकालीन साहित्य केवल ऐतिहासिक धरोहर नहीं है, अपितु आज के समय में भी अत्यंत प्रासंगिक है और साथ ही मार्गदर्शन भी करता है। जिस युग में यह साहित्य रचा गया, वह सामाजिक असमानता, धार्मिक कट्टरता और नैतिक पतन का समय था और आज वर्तमान में भी वही समस्याएँ कई रूपों में विद्यमान हैं। ऐसे में भक्तिकालीन संत कवियों की विचारधाराएँ आज भी समाज को दिशा देने की क्षमता रखती हैं।

KEYWORDS: भक्तिकाल, मानवतावाद, सामाजिक सुधार, भारतीय संस्कृति, आधुनिकता

* **डॉ. नीलांबिके पाटील,** सहायक प्राध्यापिका, हिंदी विभाग, कर्नाटक कला, वाणिज्य और विज्ञान महाविद्यालय, धारवाड़.

प्रस्तावना:

हिन्दी साहित्य का भक्तिकाल केवल धार्मिक या आध्यात्मिक अभिव्यक्ति का काल नहीं था, बल्कि यह एक व्यापक सामाजिक, सांस्कृतिक आंदोलन भी था। इस युग में संत कवियों ने समाज में व्याप्त असमानताओं, अंधविश्वासों और धार्मिक पाखंडों का विरोध करते हुए एक नई विचारधारा का निर्माण किया। हिन्दी साहित्य के इतिहास में भक्तिकाल (14वीं से 17वीं सदी) को स्वर्णयुग कहा जाता है। इस युग के संत कवियों ने जाति-पाँति, ऊँच-नीच और धार्मिक कट्टरता का विरोध करते हुए एक समतामूलक समाज की परिकल्पना की थी। आधुनिकता का अर्थ केवल तकनीकी प्रगति, वैज्ञानिक प्रगति, वैश्वीकरण, बाजारीकरण, डिजिटल क्रांति की बात नहीं है, बल्कि विचारों की स्वतंत्रता, सामाजिक समानता, नैतिक मूल्य तथा मानवीय मूल्यों का विकास भी है। यदि हम आधुनिक भारतीय समाज की जड़ों को खोजें, तो हमें भक्तिकालीन साहित्य में उसके बीज स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। आधुनिकता एक जटिल और बहुआयामी अवधारणा है। इसका संबंध व्यक्तिवाद, तर्कशीलता, सामाजिक समानता, धर्मनिरपेक्षता जैसे तत्वों से निहित है।

व्यक्तिवाद में व्यक्ति को अपनी सोच और जीवन के निर्णय लेने की स्वतंत्रता प्राप्त होती है। तर्कशीलता के तहत किसी भी बात को अंधविश्वास के बजाय तर्क और अनुभव के आधार पर परखा जाता है। सामाजिक समानता, जिसमें सभी मनुष्यों को समान अधिकार प्राप्त होते हैं। धर्मनिरपेक्षता में सभी धर्मों को समान दृष्टि से देखा जाता है। जब इन तत्वों को ध्यान में रखते हुए भक्तिकालीन साहित्य का अध्ययन किया जाता है तो यह तथ्य स्पष्ट होता है कि भक्तिकालीन साहित्य आधुनिक काल के मूल सिद्धांतों के साथ गहरे रूप से जुड़ा हुआ है। भक्तिकालीन साहित्य में प्रमुख रूप से भक्ति भावना, लोकभाषा का प्रयोग, सामाजिक समानता का संदेश और व्यक्तिगत अनुभवों की अभिव्यक्ति है। यही साहित्य के रूप में हमारे सम्मुख प्रस्तुत है।

विषय विवेचन:

भक्तिकाल को सामान्यतः ईश्वर-भक्ति का काल माना जाता है, परंतु यह केवल धार्मिक आस्था तक सीमित नहीं है। यह काल सामाजिक विद्रोह, सांस्कृतिक पुनर्जागरण और मानवीय मूल्यों के पुनर्स्थापन का युग भी रहा है। इस काल के प्रसिद्ध संत जैसे कबीरदास, सूरदास, तुलसीदास और मीराबाई ने अपने-अपने तरीके से भक्ति को परिभाषित किया था। सभी का उद्देश्य मनुष्य की आंतरिक शुद्धि और सामाजिक बंधनों से मुक्त करना ही था। इन संत कवियों के दोहों से आत्मनिरीक्षण और आत्मशुद्धि की प्रेरणा मिलती है, जो आज भी उतना ही महत्वपूर्ण है और प्रासंगिक भी।

उदाहरण स्वरूप कबीरदास जी का एक प्रसिद्ध दोहा:

"बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय।
जो दिल खोजा आपना, मुझसे बुरा न कोय।"

इस प्रकार और एक प्रसिद्ध दोहे में कबीर कहते हैं-

"माला फेरत जुग गया, फिरा न मन का फेर।
कर का मनका डारि दे, मन का मनका फेर।"

अर्थात् कबीरदास केवल धार्मिक आडंबरों का विरोध ही नहीं कर रहे होते, अपितु वे मनुष्य को आत्मचिंतन और आत्मबोध की ओर प्रेरित कर रहे होते हैं। ऐसे संदेश आज के युग में भी उतने ही प्रासंगिक हैं। इसमें बाहरी दिखावा और आंतरिक शून्यता का द्वंद्व स्पष्ट दिखाई देता है। भक्तिकाल की सबसे बड़ी विशेषता इसकी लोकभाषा में अभिव्यक्ति है। उस समय संस्कृत भाषा उच्च वर्ग तक सीमित थी, किंतु भक्तिकालीन कवियों ने ब्रज, अवधी, राजस्थानी, पंजाबी, सधुक्कड़ी जैसी भाषाओं में रचनाएँ कीं। कबीरदास की बीजक, तुलसीदास की रामचरितमानस, विनय-पत्रिका और सूरदास की सूर-सागर आदि इसके श्रेष्ठ उदाहरण हैं। इस भाषा चयन ने साहित्य को जनसाधारण से जोड़ा और उसे लोकजीवन का अभिन्न अंग बना दिया। यह प्रवृत्ति आधुनिक साहित्य के लिए एक आधारभूमि तैयार करती है। यदि भक्तिकाल आत्मा की यात्रा है, तो आधुनिक साहित्य जीवन के यथार्थ की यात्रा मान सकते हैं।

भक्तिकालीन साहित्य में निर्गुण भक्तिधारा के माध्यम से कबीर ने धार्मिक, सामाजिक आडंबरों का विरोध किया। तुलसीदास ने रामचरितमानस के माध्यम से आदर्श-जीवन मूल्यों को स्थापित किया। उनके सगुण भक्ति साहित्य में धर्म, कर्तव्य और नैतिकता का संतुलन मिलता है जो आज के दौर में भी उपयोगी सिद्ध होता है। आधुनिक जीवन में बढ़ती भौतिकता और मानसिक तनाव ने मनुष्य को आंतरिक रूप से अस्थिर बना दिया है। ऐसे में भक्तिकाल का साहित्य मानसिक संतुलन और आत्मिक शांति प्रदान करता है। मीराबाई के भक्ति पदों में कृष्ण के प्रति समर्पण व्यक्ति को अहंकार से मुक्त करता है और सूरदास की रचनाएँ प्रेम और करुणा के माध्यम से मानवीय संबंधों को सुदृढ़ करती हैं। भक्तिकाल का एक महत्वपूर्ण पक्ष सामाजिक समता का है। कबीर और अन्य संत कवियों ने जाति-व्यवस्था का विरोध किया, जो आज भी भारतीय समाज में एक प्रासंगिक मुद्दा है। इस प्रकार भक्तिकाल केवल अतीत का साहित्य नहीं, बल्कि वर्तमान सामाजिक विमर्श का भी आधार है। आधुनिक हिन्दी साहित्य का विकास राष्ट्रीय आंदोलन और सामाजिक बदलावों को केंद्र में रखकर हुआ। औपनिवेशिक शासन, स्वतंत्रता संग्राम और औद्योगिकीकरण ने समाज की संरचना को बदल दिया, जिसका प्रभाव साहित्य पर भी पड़ा। इस काल के साहित्यकारों ने जीवन के यथार्थ को केंद्र में रखा। यह हमें सामाजिक समस्याओं के प्रति जागरूक करता है और परिवर्तन के लिए प्रेरित करता है।

निष्कर्ष:

भक्तिकाल और आधुनिक साहित्य का समन्वय आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है। केवल आध्यात्मिकता से सामाजिक समस्याओं का समाधान संभव नहीं और केवल यथार्थवाद से मानसिक शांति प्राप्त नहीं होती। भक्तिकाल

और आधुनिक साहित्य के बीच स्पष्ट भिन्नताएँ हैं। एक आध्यात्मिकता पर आधारित है, जबकि दूसरा यथार्थवाद पर। फिर भी दोनों का अंतिम उद्देश्य मानव जीवन का उत्थान है। भक्तिकाल जहाँ आंतरिक शांति और नैतिकता प्रदान करता है, वहीं आधुनिक साहित्य सामाजिक जागरूकता और परिवर्तन की प्रेरणा देता है।

अतः यह आवश्यक है कि हम इन दोनों धाराओं को विरोधी न मानकर उनके समन्वय को समझें और अपने जीवन में अपनाएँ। यही समन्वय हमें एक संतुलित, संवेदनशील और जागरूक समाज की ओर ले जा सकता है। भक्तिकाल केवल एक ऐतिहासिक साहित्यिक काल नहीं है, बल्कि यह एक जीवंत विचारधारा है, जो आज भी आधुनिक समाज को दिशा प्रदान कर रही है।

संदर्भ ग्रंथ:

1. हिन्दी साहित्य की युग और प्रवृत्तियाँ - डॉ. शिवकुमार शर्मा
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास - हजारीप्रसाद द्विवेदी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
3. भक्ति आंदोलन का सामाजिक स्वरूप - रामकुमार वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
4. हिन्दी साहित्य का इतिहास - रामचंद्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी